



# Gainer Academy

**CLASS - 11TH**

## **Psychology ( मनोविज्ञान )**

### **Chapter - 3**

**The basis of human behavior**

**मानव व्यवहार के आधार**

 [www.gaineracademy.in](http://www.gaineracademy.in)

 **Gainer Academy**





Date.....1

## Lesson - 3

## मानव व्यवहार के आधार

## ☉ विकासवादी परिप्रेक्ष्य :

विकास का तात्पर्य क्रमशः एवं क्रमिक जैविकीय परिवर्तन से है जो किसी प्रजाति के पूर्ववर्ती स्वरूपों में पर्यावरण की परिवर्तित होती हुई अनुकूलन की आवश्यकताओं के प्रति उसकी प्रतिक्रिया के कलस्वरूप होता है।

- बड़ा और विकसित मस्तिष्क
- दो पैरों पर सीधा खड़ा होकर चलने की क्षमता
- संप्रेषण के लिए भाषा का उपयोग करने की अधिक क्षमता।



## व्यवहार के जैविकीय आधार :

तंत्रिका कौशिकारं : तंत्रिका कौशिकारं विशिष्ट कौशिकारं हैं, जो विभिन्न प्रकार के उद्दीपकों की विद्युतीय आवेग में परिवर्तित करने की अदभुत योग्यता रखती हैं। इसके अलावा ये सूचना को विद्युत-रासायनिक संकेतों के रूप में गूढ़ण करने, संवहन करने तथा अन्य कौशिकाओं तक भेजने में भी निपुण होती हैं।

तंत्रिकाओं के प्रकार :

1)

संवेदी

2)

पेशीय





Date.....2.....

1) सर्वदी तंत्रिकाएँ : सर्वदी तंत्रिकाएँ, जिन्हें अम्बिवाही तंत्रिकाएँ भी कहते हैं, सूचना को ज्ञानेन्द्रियों के केंद्रीय तंत्रिका तंत्र तक ले जाती हैं।

2) पैरीय तंत्रिकाएँ : पैरीय तंत्रिकाएँ, जिन्हें अपवाही तंत्रिकाएँ भी कहा जाता है, सूचना को केंद्रीय तंत्रिका तंत्र से मांसपेशियों तक ले जाती हैं।

☀ तंत्रिका तंत्र : सभी प्राणियों में मानव तंत्रिका तंत्र सर्वाधिक जटिल एवं विकसित तंत्र है। यह पूरे शरीर का कमांड सेंटर है जो सोचने, सीखने, चलने और याद रखने में मदद करता है।

• तंत्रिकाओं का यह विशाल नेटवर्क आपके सभी अंगों, मांसपेशियों और ग्रंथियों से जुड़ा हुआ है। इसे काम करते रहने के लिए देखभाल की जरूरत होती है।

स्थिति के आधार पर तंत्रिका तंत्र के दो भाग :

1) केंद्रीय तंत्रिका तंत्र

2) परिधीय तंत्रिका तंत्र

• केंद्रीय तंत्रिका तंत्र : तंत्रिका तंत्र का वह भाग जो कठोर हड्डी के खोल (कपाल और रीढ़ की हड्डी) के अंदर पाया जाता है उसे केंद्रीय तंत्रिका तंत्र कहा जाता है। मस्तिष्क और मेरुरज्जु इस तंत्र के अवयव हैं।

• परिधीय तंत्रिका तंत्र : परिधीय तंत्रिका तंत्र में वे





समस्त तंत्रिका कौशिकारं तथा तंत्रिका तंतु पास जाते हैं, जो केंद्रीय तंत्रिका तंत्र को पूरे शरीर से जोड़ते हैं। परिधीय तंत्रिका तंत्र को कार्यात्मक तंत्रिका तंत्र तथा स्वायत्त तंत्रिका तंत्र में विभाजित किया गया है।

स्वायत्त तंत्रिका तंत्र को पुनः अनुकंपी तथा परानुकंपी तंत्र में बांटा गया है।

☀ कार्यात्मक तंत्रिका तंत्र : इस तंत्र में दो प्रकार की तंत्रिकाएं होती हैं, जिन्हें कपालीय तंत्रिका और मेरू तंत्रिका कहा जाता है।

☀ कपालीय तंत्रिका : कपालीय तंत्रिकाओं के 12 समुच्चय (सेट) होते हैं, जो मस्तिष्क के विभिन्न स्थानों से निकलते या उस तक पहुंचते हैं। तीन प्रकार की कपालीय तंत्रिकाएं होती हैं - संवेदी, पैरीय, मिश्रित।

☀ मेरू तंत्रिका : मेरू तंत्रिकाओं के 31 समुच्चय होते हैं जो मेरुरज्जु से निकलते और उस तक पहुंचते हैं। प्रत्येक समुच्चय में संवेदी और पैरीय तंत्रिकाएं होती हैं।

☀ स्वायत्त तंत्रिका तंत्र : यह तंत्र उन क्रियाओं का संचालन करता है जो सामान्यतः हमारे प्रत्यक्ष नियंत्रण में नहीं होती। यह ऐसे आंतरिक प्रकायों जैसे सांस लेना, रक्त संचार, लार स्राव, उदर संकुचन और सांवेगिक प्रतिक्रियाओं का नियंत्रण करता है। स्वायत्त तंत्रिका तंत्र की ये क्रियाएं मस्तिष्क के विभिन्न भागों के नियंत्रण में होती हैं।





## मस्तिष्क और व्यवहार

एक वयस्क मस्तिष्क का भार लगभग 1.36 Kg होता है तथा इसमें लगभग 100 अरब तंत्रिका कोशिकाएँ होती हैं।

## मस्तिष्क की संरचना :

मस्तिष्क को तीन हिस्सों में बांटा जा सकता है :  
पश्चिम मस्तिष्क, मध्य मस्तिष्क एवं अग्र मस्तिष्क।



## अंतः स्त्रावी तंत्र

अंतः स्त्रावी तंत्र अंतर्को (मुख्यतः ग्रंथियों) से बना होता है जो हार्मोन बनाते और छोड़ते हैं। हार्मोन ऐसे रसायन होते हैं जो आपके रक्त के माध्यम से आपके अंगों, त्वचा, मांसपेशियों और अन्य अंतर्को तक संदेश पहुँचाकर आपके शरीर में विभिन्न कार्यों का समन्वय करते हैं।

## शरीर की मुख्य अंतः स्त्रावी ग्रंथियाँ :

- 1) पीयूष ग्रंथि
- 2) अवटु ग्रंथि
- 3) अधिवृक्क ग्रंथियाँ
- 4) अग्रपिण्ड
- 5) जननग्रंथियाँ





Date..... 5 .....

## आनुवंशिकता : जीन एवं व्यवहार

अपने पूर्वजों से उत्तराधिकार में प्राप्त शारीरिक और मनोवैज्ञानिक विशेषताओं का अध्ययन आनुवंशिकी कहलाता है।

- आनुवंशिकी जीन और आनुवंशिकता का वैज्ञानिक अध्ययन है, और हमारी आनुवंशिक सामग्री में परिवर्तन स्वास्थ्य और बीमारी में कैसे योगदान करते हैं।

आनुवंशिकता : एक पीढ़ी (माता-पिता) से इसी दूसरी पीढ़ी (संतान) तक जीन के माध्यम से लक्षणों या विशेषताओं का हस्तांतरण।

गुणसूत्र : एक सूक्ष्म धागे जैसी संरचना है जो तैलीन से बनी होती है और ये जानवरों, मनुष्यों और पौधों की प्रत्येक कोशिका के केंद्रक में पाए जाते हैं।  
मनुष्यों में, गुणसूत्रों के 23 जोड़े होते हैं।

जीन : आनुवंशिकता की मूल भौतिक और कार्यात्मक शारीरिक इकाई है।

सांस्कृतिक आधार : व्यवहार का सामाजिक-सांस्कृतिक निरूपण

संस्कृति का संप्रत्यय : संस्कृति का तात्पर्य पृथिवी के मानव निर्मित भाग से है। इसमें बहुत से लोगों के व्यवहार के साथ-साथ हमारे अपने व्यवहार के विभिन्न उत्पाद सम्मिलित हैं।





- ये उत्पाद भौतिक वस्तुएं (यथा औजार, मूर्तियाँ) विचार (यथा श्रवियाँ, मानक) या सामाजिक संस्थान (यथा, परिवार विद्यालय) हो सकते हैं।

संस्कृति क्या है ?

संस्कृति उन लोगों के व्यवहारत्मक उत्पादों को सम्मिलित करती है जो हमसे पहले आ चुके हैं। यह मूर्त या अमूर्ति अमूर्त दोनों उत्पादों के बारे में इंगित करती है जो किसी न किसी रूप में पहले रह चुके हैं।

अतः जैसे ही हम जीवन शुरू करते हैं संस्कृति वहाँ पहले से उपस्थित होती है।

इसमें कुछ मूल्य होते हैं जो प्रकट किए जाते हैं और उनको प्रकट करने के लिए एक भाषा होती है।

संस्कृति एवं 'समाज'

- समाज लोगों का एक समूह है जिनकी एक विशिष्ट सीमा होती है और वे एक सामान्य भाषा बोलते हैं।

- प्रत्येक समाज की अपनी एक संस्कृति होती है। ये संस्कृति ही है जो एक समाज से दूसरे समाज के मनुष्यों के व्यवहारों का निरूपण करती है।





Date.....7.....

- एक समाज से दूसरे समाज में जो विविधताएँ होती हैं उन्हीं को संस्कृति का नाम दिया जाता है।

## संस्कृतीकरण

संस्कृतीकरण उस सभी प्रकार के अधिगम को कहते हैं जो बिना किसी प्रत्यक्ष और सुविचारित शिक्षण के होता है।

संस्कृतीकरण : भारत में देखा जाने वाला विशेष तरह का सामाजिक परिवर्तन है। इसका मतलब है वह प्रक्रिया जिसमें जातिव्यवस्था में निचले पायदान पर स्थित जातियाँ ऊँचा उठने का प्रयास करती हैं। ऐसा करने के लिए वे उच्च या प्रभावी जातियों के रीति-रिवाज, संस्कृति तथा प्रचलनों को अपनाती हैं।

## समाजीकरण

समाजीकरण एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा लोग, जून कौशल और शील गुण अर्जित करते हैं जो उन्हें समाज और समूहों के प्रभावी सदस्यों के रूप में आग लेने के योग्य बनाते हैं।

सामाजीकरण कारण : माता-पिता :  
विद्यालय :  
समसमूह :  
जन संचार का प्रभाव :





परसंस्कृतिग्रहण : परसंस्कृतिग्रहण का तात्पर्य दूसरी संस्कृतियों के साथ संपर्क के नए फलस्वरूप आरंभ होने वाले सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों से है।

- वह प्रक्रिया जिसके द्वारा व्यक्ति उस समूह या समाज के सांस्कृतिक मानदंडों को आत्मसात करता है जिससे वह संबंधित है।

इस प्रक्रिया के माध्यम से, लोग समूह के मानदंडों के आधार पर अपनी कार्यों और दृष्टिकोण को बदलना शुरू करते हैं।

---

## About

---

### WELCOME TO GAINER ACADEMY

I am Pankaj Verma Welcome to Our Study Verse Learn Anything, Anywhere, Anytime. Improve your skills with our Tutorials. Unlock your potential and achieve success with us and Unleash your inner genius with our expert guidance.

We are offering a wide range of educational programs for all age groups and all standard. We have dedicated teachers for helping students to reach their full potential and also guide students of their journey to success.

---

we are also available on

---



[www.gaineracademy.in](http://www.gaineracademy.in)



[GAINER ACADEMY](#)



[gaineracademy@gmail.com](mailto:gaineracademy@gmail.com)



[gainer\\_academy](#)

